5

किताबों ने जगाई पढ़ने में रुचि

अंजुला सागर*

पाठ्यपुस्तकों के अलावा जब बच्चे रंग-बिरंगे चित्र, कहानियों की किताबें देखते हैं, पढ़ते हैं तो वे स्वयं बहुत कुछ सीखने और जानने को जिज्ञासु हो जाते हैं। बच्चों को चाहिए बस एक मौका, उड़ान भरने का। पुस्तकें उन्हें ये आज़ादी देती हैं। ऐसा ही अनुभव हुआ आदिवासी बच्चों के साथ घाटीगाँव, ग्वालियर, मध्यप्रदेश में सी.आई.ई.टी., एन.सी.ई.आर.टी. द्वारा बच्चों और शिक्षकों की शैक्षिक आवश्यकताओं को जानने हेतु एक परियोजना के अंतर्गत घाटीगाँव के दस प्राथमिक विद्यालयों को चुना गया, ताकि उनकी आवश्यकताओं के अनुरूप शैक्षिक कार्यक्रमों का विकास किया जा सके और गुणवत्ता शिक्षा के समान अवसर आदिवासी बच्चों को भी मिल सकें। परियोजना का नाम था - शैक्षिक मीडिया कार्यक्रम निर्माण के संदर्भ में आदिवासी क्षेत्र के प्राथमिक विद्यालय के शिक्षकों और बच्चों की आवश्यकताओं का अध्ययन। इस परियोजना के उद्देश्य थे:

- आदिवासी क्षेत्र के प्राथमिक स्तर के बच्चों और शिक्षकों की मीडिया कार्यक्रमों से संबंधित आवश्यकता का आकलन करना।
- सामाजिक-सांस्कृतिक संदर्भ के आधार पर प्राथमिक स्तर के बच्चों और शिक्षकों का 'प्रोफाइल' तैयार करना।

ये बच्चे अपने परिवार में प्रथम पीढ़ी के हैं, जो शाला पढ़ने आए। इनके माता-पिता की आर्थिक-सामाजिक स्थिति अच्छी नहीं है। गरीबी के कारण माता-पिता का संपूर्ण दिवस धनोपार्जन में निकल जाता है। अत: वे अपने बच्चों की शिक्षा की तरफ कोई विशेष ध्यान नहीं दे पाते। घाटीगाँव में स्थित इन शालाओं में जाने पर पाया कि बच्चों की शाला आने में नियमितता नहीं है। रोज अलग बच्चे शाला आते थे। शाला में उपलब्ध मूलभूत सुविधाओं का अभाव है। शाला में ऐसा कुछ भी नहीं है जो इन बच्चों को शाला नियमित रूप से आने को आकर्षित करे। सर्व शिक्षा अभियान के अंतर्गत

* *क्षेत्र निरीक्षक*, सी.आई.ई.टी., एन.सी.ई.आर.टी., नयी दिल्ली- 110016

इन बच्चों का नामांकन तो हो गया, पर नियमित रूप से आते नहीं थे।

अत: परियोजना समन्वयक एवं क्षेत्र निरीक्षक ने समस्या को जानने, दूर करने के लिए शिक्षकों और अभिभावकों के साथ चर्चा करके इस स्थिति को विस्तार-पूर्वक समझा और उनकी समस्याओं का समाधान ढूँढ़ने की कोशिश की। शिक्षक/शिक्षिका को कैसी पद्धति अपनाकर इन बच्चों को ज्ञान देना है, इसके विषय में जानकारी नहीं थी। ये पाया गया कि शिक्षक/शिक्षिका को अध्यापन के अलावा प्रशासन से मिले बहुत सारे प्रशासनिक कार्यों को भी करना पड़ता है। वे दिन का अधिक समय विभिन्न सूची बनाने, रजिस्टरों में लेखा-जोखा भरने में व्यतीत कर देते हैं।

'मिड डे मील' में मिलने वाले भोजन के बाद शाला में कभी-कभी बच्चों की संख्या और भी कम हो जाती है। परियोजना के सदस्यों ने सुझाया कि 'मिड डे मील' के बाद भी शाला में ऐसा कुछ हो, जिससे बच्चे शाला से न जाएँ।

भाषा या विषय सिखाने के लिए कहानी एक रोचक माध्यम है। कहानी सुनने की बात से सभी बच्चे खुश हो गए। शाला में उपस्थित बच्चों से बात करने पर पाया कि बच्चे चाहे किसी भी क्षेत्र समुदाय के क्यों न हो, कहानी सुनना सभी बच्चों को अच्छा लगता है। घाटीगाँव के बच्चों का यथार्थ भी यही था। ये बच्चे जल्दी ही क्षेत्र निरीक्षक से घुलमिल गए और याद की हुई कविता-कहानी सुनाने लगे। परिणाम यह हुआ कि अपनी निजी बातें बच्चे आसानी से करने लगे। जिससे उनका सरल एवं निश्छल स्वभाव सामने आया। बच्चों में नया सीखने की प्रबल इच्छा थी। वे नई कहानियाँ सुनने को तैयार थे। पढ़ना सिखाने में कहानी सुनने -सुनाने का इस्तेमाल करा जाए, जिससे पढ़ना सिखाने की ओर बड़ी सरलता-सहजता से बच्चे पढ़ने लगेंगे। हमने शिक्षकों के साथ इस संबंध में बात की। बच्चों का उत्साह नई पुस्तकों को देखने के लिए बहुत था।

सभी बच्चों के पास अपना एक बड़ा-सा थैला था। पूछने पर उन्होंने बताया कि इस थैले में उन्हें शाला से मिली पुस्तकें, स्लेट और एक थाली है। एक छात्रा को अपनी पुस्तक निकाल कर पढ़ने को कहा तो उसने पुस्तक, जिसके पन्ने पुराने हो गए थे, निकाली मगर वह पढ़ नहीं पायी। फिर उसे अपना नाम लिखने को कहा, जिसे वह नहीं लिख पाई। अब पूछा कि किसी ऐसी किताब का नाम बताए जो उसने शाला में या घर में पढ़ी हो। इस बात पर कक्षा के दूसरे बच्चों ने जल्दी से जवाब दिया कि कोई और पुस्तक नहीं मिलती बस यही पाठ्यपुस्तक मिलती है। यानी इन बच्चों ने कभी पाठ्यपुस्तक के अलावा कोई अन्य पुस्तक देखी भी नहीं है। हमें लगा कि इन्हें कभी कोई अन्य पुस्तक शिक्षकों के द्वारा नहीं दिखाई गई। हमारे यह पूछने पर कि क्या अच्छी-अच्छी कहानी, कविता आदि की पुस्तकें देखना-पढ़ना चाहोगे तो सभी बच्चों ने एक साथ खुश होकर 'हाँ' में जवाब दिया।

इससे एक बात बिल्कुल स्पष्ट हो गयी कि उनके पास पढ़ना सीखने के लिए सिर्फ़

पाठ्यपुस्तक ही माध्यम है। इसके अलावा शाला में श्यामपट्ट है, जिसमें ठीक से कुछ भी पढ़ा नहीं जा रहा है। कक्षा की दीवार पर केवल अक्षर ज्ञान का एक फटा और बहुत पुराना चार्ट टँगा हुआ है। साथ ही यह चार्ट काफी ऊँचाई पर टँगा है, जिसे पढ़ने के लिए बड़ों को भी कठिनाई हो रही थी। कक्षा से बाहर निकलने पर बड़ा-सा मैदान, बड़े-बड़े उबड़-खाबड़ पड़े हुए पत्थर, इधर-उधर उगी हुई झाड़ियाँ दिखाई दे रही थीं।

शिक्षकों के साथ बैठक में इन सभी समस्याओं पर चर्चा कर ये निर्णय लिया गया कि सबसे पहले शाला और कक्षा का वातावरण आकर्षक बनाया जाए, ताकि अधिक से अधिक बच्चे शाला आएँ और शाला दिखने में साफ़-सुथरी और सुंदर लगे। बच्चों को शाला अपनी लगे। शाला से उनका जुड़ाव हो। बच्चों के पढ़ने और सीखने की प्रक्रिया को रुचिकर बनाया जाए। इसके लिए बच्चों द्वारा स्वयं करने वाली गतिविधियों का प्रावधान हो। विभिन्न पुस्तकें उन्हें देखने और पढ़ने को मिलें। कक्षा के एक कोने में छोटा-सा रीडिंग कॉर्नर बनाया जाए। इससे बच्चे शाला नियमित रूप से आने को प्रेरित होंगे। यह पाया गया कि शिक्षकों को उनके परिवेश से संबंधित उचित प्रशिक्षण की आवश्यकता है जिससे वे उत्साहित होंगे, शिक्षकों का आत्मविश्वास बढ़ेगा और अधिकारियों को उन पर विश्वास कर शिक्षा स्तर में गुणवत्ता लाने के लिए सहयोग करने को प्रेरित करना होगा। अतः शिक्षकों के लिए विभिन्न विषयों से संबंधित प्रशिक्षण कार्यक्रम इस परियोजना में समय-समय पर आयोजित किए गए, जिससे छात्र-शिक्षक दोनों को ही लाभ मिले।

बच्चों की किताबों के प्रति रुचि और उत्साह को देखते हुए परियोजना में चयनित इन दसों प्राथमिक विद्यालयों को सी.आई.ई.टी., एन.सी.ई.आर.टी. द्वारा विभिन्न स्तर के बच्चों के लिए विभिन्न पुस्तकों के सेट भेजे गए। इनमें बच्चों के स्वास्थ्य, सफ़ाई संबधी कहानियाँ, गतिविधियाँ आदि की पुस्तकें थीं। शिक्षकों के लिए प्रशिक्षण कार्यक्रम आयोजित किए गए जिसमें विभिन्न विषयों व प्रशिक्षण सामग्री के उपयोग की विस्तार से चर्चा शिक्षकों के साथ की गई। शाला के विभिन्न कार्यों में शिक्षकों के सहयोग हेतु समुदाय के किसी व्यक्ति को नियुक्त करने की बात आई। इसे प्रेरक का नाम दिया गया जो कि इन दसों विद्यालयों के शिक्षकों के कार्यों में सहयोग करेगा।

धीरे-धीरे विभिन्न प्रयासों से प्रेरक, शिक्षकों और बच्चों की विद्यालय के प्रति रुचि जागी। ये पाया गया कि घाटीगाँव के परियोजना विद्यालयों में काफ़ी बदलाव आया है। छात्रों की मदद से विद्यालय अब सुंदर बना लिए गए। आस-पास कोई गंदगी नहीं थी। पत्थरों से सुंदर-सी चारदीवारी विद्यालय के चारों ओर बना ली गई थी। कक्षा में एक किनारे पर बच्चों ने रस्सी बाँधकर पुस्तकें सजा ली हैं। बच्चे इस कोने में जाकर मनपसंद पुस्तक उठाकर अपने स्थान में बैठकर आराम से पुस्तक पढ़ रहे थे। बच्चों से पूछने पर उन्होंने बताया कि उन्हें पुस्तकें बहुत अच्छी लगी। एक छात्रा जो

पिछली बार कुछ नहीं पढ़ रही थी, वह पुस्तक से कहानी पढ़कर सुनाने लगी। सभी बच्चों के चेहरे दमक रहे थे। वे खुश थे और जिज्ञासु भी कुछ नया सीखने के लिए!

सभी बच्चे कक्षा में अपने मनपसंद कार्यों में लगे थे, अब सभी बच्चे स्वयं से अनुशासित थे। शिक्षक ने बताया कि अब कक्षा चार-पाँच के बच्चे स्वयं अक्षरों को जोड़कर कहानी पढ़ने का प्रयास करते हैं। अपने आप पढ़ने में बच्चों की रुचि जाग रही है। इन्हें नई पुस्तकें देखने की इच्छा रहती है। जिसके लिए ये रोज शाला आते हैं। अब ये पाठ्यपुस्तक में दी गई कहानी को भी पढ़ने की कोशिश करते हैं, जिससे इनकी पढ़ाई में रुचि जागृत हो गई। पढ़ने के कौशल से लिखने में भी रुचि जागने लगी। इतना ही नहीं, अब बच्चे मन में उठे प्रश्नों के उत्तर भी शिक्षक से जानना चाहते हैं। बच्चे पढ़ी हुई बातों पर घर में भी चर्चा करते हैं, जिससे अभिभावक भी खुश होकर बच्चों को विद्यालय भेज रहे हैं।

कक्षा में बने रीडिंग कॉर्नर में कहानी पढ़ने की जो रुचि बच्चों में जगी, इसका अच्छा परिणाम यह हुआ कि पाठ्यपुस्तकों की ओर रूझान हुआ। पाठ्यपुस्तक की रचनाओं को भी स्वयं पढ़ने की कोशिश करने लगे। इतना ही नहीं यह भी देखा गया कि वे परिवेश में उपलब्ध प्रिंट सामग्री को रुक कर पढ़ने की कोशिश करते हैं और रुचि दिखाते हैं। इस प्रकार घाटीगाँव के आदिवासी बच्चों की पढ़ने में रुचि जगाने में कक्षा और विद्यालय के वातावरण ने बहुत बड़ी भूमिका निभाई। पाठ्यपुस्तकों से भी उनका जुड़ाव बनने लगा। बच्चों से यदि बातचीत करके उनकी झिझक दूर की जाए और एक स्नेहिल रिश्ता कायम कर लिया जाए तो बच्चे विद्यालय से दूर भागने की बजाय विद्यालय आना चाहते हैं। विद्यालय तथा कक्षा का माहौल बच्चों में निश्चित रूप से रुचि जगाता है और यह रुचि एक बार जागृत हो गई तो बच्चा विद्यालयी शिक्षा पूरी करके ही विद्यालय से निकलता है। बस ज़रूरत है शिक्षक द्वारा कुछ करने का संकल्प ठान लेने की।

रंग-बिरंगी चित्रों की किताबों से इन आदिवासी बच्चों को भी अपने मन की उड़ान भरने, अपने जैसे दूसरे बच्चों की कहानियाँ पढ़ने-जानने की इच्छा को बल मिला। इस प्रकार बच्चों में पढ़ने-लिखने के कौशल के साथ सुनने और बोलने के कौशल का भी विकास होने लगा। पुस्तकों की मदद से बच्चों को उनकी पाठ्यपुस्तक से जुड़ाव कराने का यह प्रयोग दर्शाता है कि दुनिया के किसी कोने पर कोई भी शिक्षक चाहे तो सीखने-सिखाने का खुशनुमा वातावरण अपनी कक्षा में आसानी से ला सकता है।

❑❑❑